ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-9* December- 2017
Anthology : The Research

संत साहित्य में नारी सरोकार

प्रीती बरसेना
शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
कालेज लिखें
ग्वालियर

सारांश

धर्म विराग और त्याग की भिन्ति पर स्थित संत सम्प्रदाय के विरागमूलक धर्म में नारी अपने कामिनी रूप तथा प्रलोभनों के साथ अवरोध–संदृश थी। विष्व के प्रत्येक राष्ट्र एवं युग के विरागियों ने नारी को कामिनी एवं तप के मार्ग की वाधामानकर उसे गर्हित माना है''। संत कवियों पर सदैव से आरोप लगते रहे है कि उन्होने नारी के प्रति संकुचित दृष्टिकोण को अपनाया है। परन्तु यह सत्य प्रतीत नही होता क्योंकि किसी भी संत के काव्य में नारी को हेय या अपमान की दृष्टि से नही देखा गया। बल्कि उनके सतीत्व एवं पवित्रता की प्रशंसा की है।

मुख्य शब्द : Please add some keywords

प्रस्तावना

सभी संतो ने नारी के कामनीय रूप की अवश्य ही निन्दा की है। संत रैदास जी नारी का बहुत आदर एवं सम्मान करते थे। समाज में स्त्री को सम्मान और अधिकार दिलाने के लिये उन्होनें कई महत्वपूर्ण प्रयास किये। उनके इन्ही गुणो से प्रभावित होकर झाली रानी और मीरा बाई ने इनका शिशत्व स्वीकार किया ये दोनो रानियां ही आपकी विचार धारा और भक्ति से अत्यधिक प्रभावित थी। झाली रानी और मीरा बाई ने अपने समाज परिवार रिष्तेदारों सभी का विरोध सहते हुये भी रैदास को अपना गुरू बनाया व उनके साथ भजन कीर्तन सत्संग भी किये। मीरा बाई ने रैदास को अपना गुरू स्वीकार करते हुये स्वयं कहा है–

मीरा सतगुरू देव की करै वन्दना आस।
जिन चेतन आतम कहा, धन भगवन्त रेदास।।
रैदास संत मिले मोहि सतगुरू दीन्हा
सूरत सहदानी .....।।[2]

संत रैदास जी भक्तिकाल के निर्गुण भक्ति शाखा के प्रमुख संत है उन्होंने समाज को रूढिग्रस्त भावनाओं से जाग्रत करने के लिये अपने साहित्य के माध्यम से कई सुझाव दिये है। संत रैदास ने सम्पूर्ण समाज को चेतावनी देते हुए कहा है कि वासना की प्रतीक पर स्त्री को मानकर उससे दूर रहना चाहिए। इन्होंने पर स्त्री के प्रति आसक्ति के दुष्परिणाम की ओर संकेत किया है–

रे मन मांछला संसार सगन्दे तू चित्र विचित्र विचारिये
नि गैले गलियाहि गारिये सौ संग इरि निवारिरे।
जम छ डिगम डोरि. छै कंकण पर त्रिया लागो जानिरो।।

संत रैदास के पूर्ववर्ती संतो एवं सम्प्रदायों के प्रर्वतको ने स्त्री के कामनीय और वासनाग्रस्त रूप का वर्णन किया है। नाथ पंथियों में नारी को योगमार्ग मे बाधा और पुरूष जाति का नाष करने वाली मानते हुये उसे पतितकारणी निन्दनीय एवं व्माज्य माना है। नाथ पंथियों की दृष्टि बिन्दु बज्रयानियों की धोर कामुकता एवं इन्द्रियपरायणता की प्रतिक्रिया में विकसित हुई। नारी उपासना के दुष्परिणाम और अनाचारों को देखकर ही गोरखनाथ को घोषित करना पड़ा कि नारी के संसर्ग मे तीन पुरूष सरिता के तट पर स्थित अनिषिचत जीवन वाले वृक्ष के समान है। इन्होंने नारी को भोग विलास और विला सतापूर्ण बताते हुये पुरूष समाज के लिये अनिष्टकारी बताया है। नारी के कामनीय रूप सभी ने विरोध अवष्य ही किया है। नारी के कामजनित–वास नात्यक स्वरूप को घृणास्पद और

गर्णित बताया है। उन्होने 'काम' मात्र को ही घृणित किया है न कि स्त्री पुरूष दाम्पव्य प्रेम को। संतो ने पुरूष एवं नारी दोनों को ही एक दूसरे के लिये कल्याण कारी एवं बन्धन स्वरूप माना है। संत कवियों ने निर्गुण निराकार ब्रहा को अपना उपासक माना है। उसकी भक्ति के लिये दाम्पव्य भाव की प्रधानता को सभी ने स्वीकारा है। इसलिये नारी को असत मानते हुये भी उसे हदय की कुसुम, कोमल भावनाओं का आलम्बन और प्रभु की बहुरिया माना है। नारी प्रेम की प्रतीक है। प्रेम दो रूपों में विभाजित है प्रथम संयोग और दूसरा वियोग। प्रेम के ये दोनों ही रूप एक दूसरे के पूरक है।[3]

संयोग काल में प्रिय के साथ रहने से जो आनंद और सुख मिलता है। वो और कही नही मिलता। नारी के हदय में अपने प्रियतम के दर्षनों की अति व्याकुलता रहती है। वह उत्कृष्ठ अभिलाषा और उत्सुकता के साथ अपने प्रिय के मिलने का इंतहार करती है। और उसे मिलने के लिये सोलह श्रंगार करती है।

वे दिन कब आवेगे माई
ज कारन हम देह धारी हे
मिलिवो अंग लगाई।।

स्त्री के वियोग का वर्णन करते हुये कबीरदास जी कहते है कि नारी अपने प्रियतम की रहा देख रही है। उसे अपने शरीर की हालत का कुछ भी ज्ञान नही है वह सिर्फ अपने प्रियतम से मिलने को तड़पती रहती है।

तलफै विनु वालम मोर जिया,
पिया मिलन की आस रहै। कब लौ खरी
ऊचे नहि चढ़े जाय मन लज्जा भारी।

नारी के पतिव्रता रूप का वर्णन

संत काव्य मे पतिव्रता शब्द के दो अर्थ है लौकिक और अलौकिक। लौकिक पतिव्रता से उनका तात्पर्य सामान्य स्त्री से है जो एक निष्ठ भाव से अपने पति की सेवा और उपासना करती हुई अपने परिवार धर्म का पालन करती है। जिसके लिये चरणदास के शब्दों में पर घर के वैभव से अपना दैन्य श्रेयस्कर है। 4

संत काव्य में आलौकिक पतिव्रता से तात्पर्य भक्ति से है। ऐसी स्त्री जो इष्ट के प्रति अटूट श्रद्धा और एक निष्ठ भाव रखती है।

निष्कर्ष

संत कवियो की आदर्ष नारी पति को परमेष्वर मानकर उसका निर्विरोध आज्ञा पालन एवं सेवा करने वाली पतिव्रता नारी है।

दुलहिन गावहु मंगलचार
हम धरि आए राजाराम भरतार।।

संतो ने व्रहानी प्राप्ति का साधन प्रेम को माना है। आत्मा और परमात्मा का जन्य जन्मांतर का सम्बन्ध है। विरहिणी आत्मा प्रिय के नयनाभिराम रूप के दर्षनो की लालसा करती है। जीवात्मा का यह प्रेम पूर्वराग के रूप मे प्रकट होता है। पतिव्रता नारी सर्वधर्म मे सम्मानीय और पूज्यनीय है। समस्त जन समुदाय एवं सन्तो भक्तो ने उस स्त्री का सम्मान और आदर किया है। जो सच्चे मामने मे एक पतिव्रता है। संत कबीरदास भक्त और पतिव्रता को एक कोटि मे रखते थे दोनो का धर्म कठोर है। दोनो की वृत्ति कोमल है। दोनो के सामने प्रलोभन का दुस्तर जंजाल है। दोनो ही कंचन धर्मी है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य मे नारी भावना पृष्ठ 81)*
2. *संत रविदास और उनका काव्यशमानंद शास्त्री पृष्ठ 1245।*
3. *हिन्दी काव्य मे निर्गुण सम्प्रदाय डॉ.पीताम्बर वत्थ वड़खाल अनु.परषुराम चतुर्वेदी पृष्ठ 354*
4. *चरनदास संत वानी संग्रह पृष्ठ 147*